सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के उदय में स्वामी विवेकानंद का योगदान

रेणु बाला, शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र, श्री वेंकटेश्वर युनिवर्सिटी, गजरोला यू. पी.।
डॉ रमेश तिवारी, असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र, श्री वेंकटेश्वर युनिवर्सिटी, गजरोला यू. पी.।

सार

स्वामी विवेकानंद दिल और आत्मा के सच्चे राष्ट्रवादी थे। उनका मानना था कि प्रत्येक राष्ट्र के जीवन में एक ही प्रमुख सिद्धांत प्रकट होता है। उन्होंने कहा, प्रत्येक राष्ट्र में, जैसा कि संगीत में होता है, एक मुख्य स्वर होता है, एक केंद्रीय विषय होता है, जिस पर अन्य सभी मुड़ते हैं। प्रत्येक राष्ट्र का एक विषय होता है, बाकी सब कुछ गौण होता है भारत का विषय धर्म है। सामाजिक सुधार और बाकी सब गौण हैं।

श्री अरबिंदो और बिपिन चंद्र पाल की तरह स्वामी विवेकानंद ने राष्ट्रवाद के धार्मिक आधार की वकालत की। अध्यात्म या धर्म को कर्मकांडों, सामाजिक हठधर्मिता, उपशास्त्रीय योगों और अप्रचलित वेशभूषा के साथ भ्रमित नहीं होना चाहिए। धर्म से विवेकानंद ने नैतिक और आध्यात्मिक उन्नति के शाश्वत सिद्धांतों को समझा। वह सार्वभौमिक सहिष्णुता में विश्वास करते थे न कि सामाजिक और धार्मिक थोपने में। इसलिए उन पर सांप्रदायिकता या सांप्रदायिकता का आरोप नहीं लगाया जा सकता।

मुख्य शब्द

भारतीय, देशभक्ति, राष्ट्रवाद

परिचय

विवेकानंद ने महसूस किया कि भारतीय राष्ट्रवाद को स्वामी विवेकानंद और राष्ट्रवाद की स्थिर नींव पर बनाया जाना था और राष्ट्रवाद डॉ सरोज कुमार पांडा ऐतिहासिक विरासत के बाद। अतीत में भारत की रचनात्मकता धर्म के क्षेत्र में मुख्य रूप से और प्रमुख रूप से व्यक्त की गई थी। भारत में धर्म एकीकरण और स्थिरता की एक रचनात्मक शक्ति रहा है। जब भारत में राजनीतिक सत्ता ढीली और कमजोर हो गई थी, इसने उस घटना को पुनर्वास की एक शक्ति प्रदान की। इसलिए, उन्होंने घोषणा की कि राष्ट्रीय जीवन को धर्मों के विचार के आधार पर व्यवस्थित किया जाना चाहिए। इस विचार के समर्थक के रूप में, उन्होंने वेदों और उपनिषदों की शाश्वत चीजों को पुनर्जीवित किया ताकि राष्ट्र के विकास और उसके व्यक्तित्व में विश्वास को मजबूत किया जा सके।

बंकिम की तरह विवेकानंद की आत्मा एक देवता के रूप में भारत माता की उज्ज्वल दृष्टि से प्रकाशित हुई थी। 2 उनके लिए भारत का मतलब केवल एक भौगोलिक इकाई या अभिजात वर्ग के लिए अवसरों का स्वर्ग नहीं था। इसलिए विवेकानंद ने जनता को जगाने, उनकी शारीरिक और नैतिक शक्ति के विकास और उनमें भारत की प्राचीन महिमा और महानता के गौरव की चेतना पैदा करने के लिए काम किया। इसलिए उन्हें भारत में आधुनिक राष्ट्रवाद के महान वास्तुकारों में से एक के रूप में सम्मानित किया गया। डॉ. राव के शब्दों में, देशभक्ति का अर्थ है देश से प्रेम और देश का अर्थ जनता से है। धर्म के द्वारा ही इस मार्ग पर विवेकानंद पहुंचे।

विवेकानंद एक उत्साही देशभक्त थे और उन्हें देश के प्रति अपार प्रेम था। वे भावनात्मक देशभक्ति के प्रतिमूर्ति थे। एक राष्ट्र व्यक्तियों से बना होता है। इसलिए विवेकानंद ने जोर देकर कहा कि मर्दानगी, मानवीय गरिमा और सम्मान की भावना जैसे महान गुणों को सभी व्यक्तियों द्वारा विकसित किया जाना चाहिए।

इन व्यक्तिवादी गुणों को पड़ोसी के लिए प्रेम की सकारात्मक भावना के साथ पूरक करना था। निःस्वार्थ सेवा की गहरी भावना के बिना राष्ट्रीय एकता और बंधुत्व के बारे में बात करना मात्र एक छलावा था। देश और राष्ट्र के अहंकार के साथ अपने अहंकार की पहचान करना आवश्यक था।

एक सिद्धांतकार और शिक्षक के रूप में विवेकानंद ने देश को निर्भयता और शक्ति का विचार दिया है। उनकी उत्कृष्ट विरासत यह थी कि उन्होंने जीवन और धर्म में सामंजस्य स्थापित किया और कभी–कभी धर्म की एक राष्ट्रीय, लगभग व्यावहारिक परिभाषा दीरू ताकत ही धर्म है। विवेकानंद ने घोषणा की, मेरे धर्म का सार शक्ति है। जो धर्म हृदय में शक्ति का संचार नहीं करता, वह मेरे लिए कोई धर्म नहीं है, चाहे वह उपनिषदों का हो, गीता का हो या भागवत का हो। ताकत धर्म से बड़ी होती है और ताकत से बड़ी कोई चीज नहीं होती ।

विवेकानंद ने भारत में चल रही अत्याचारी, राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्था की निंदा करने की नकारात्मक नीति का अनुसरण नहीं किया, लेकिन सकारात्मक रूप से शक्ति की खेती पर जोर दिया। उन्होंने खुले तौर पर भारत की राजनीतिक मुक्ति के कारण की वकालत नहीं की। वह दो कारणों से ऐसा नहीं कर सका। सबसे पहले, वह एक सन्यासी थे और राजनीतिक और कानूनी विवादों में नहीं पड़ना चाहते थे।

दूसरे, उन दिनों भारत में ब्रिटिश साम्राज्यवाद की जड़ें मजबूत थीं। यदि विवेकानंद ने खुले तौर पर राजनीतिक स्वायत्तता की वकालत की होती, तो उन्हें कारावास का सामना करना पड़ता। इसका मतलब होगा कि उनकी ऊर्जा और काम से विचलित होना जो उनके दिल को सबसे प्रिय था उनके देशवासियों का नैतिक और धार्मिक उत्थान। यद्यपि विवेकानंद ने ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरोध में भारतीय राष्ट्रवाद के किसी भी विरोधवादी सिद्धांत की खुले तौर पर वकालत नहीं की, लेकिन वे गरीबों और दलितों की मुक्ति के लिए पूरी तरह समर्पित थे।

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के आगमन के साथ भारतीय राष्ट्रवाद के अध्ययन ने बहुत महत्व ग्रहण कर लिया था। उस समय तक विवेकानंद के लेखन और भाषणों ने सिद्धांत और व्यवहार में बंगाल राष्ट्रवाद की नैतिक नींव को मजबूत करने में काफी योगदान दिया था। वास्तव में, उन्होंने अपने लेखन के माध्यम से राष्ट्रवादियों के बीच अतीत में गर्व की भावना प्रदान की और उन लोगों को एक सांस्कृतिक आत्मविश्वास दिया, जिन्होंने अपना आत्म सम्मान खो दिया था। ऐसे समय में जब भारतीय बुद्धिजीवी पश्चिमी लोगों की नकल करने में व्यस्त थे, विवेकानंद ने साहसपूर्वक घोषणा की कि पश्चिम को भारत से बहुत कुछ सीखना है। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की उत्पत्ति को समझने के लिए 1904 से 1907 के बीच के राजनीतिक साहित्य को पढ़ना बेहद जरूरी है जो विवेकानंद के सुसमाचार और लेखन से भरा है।

2012 में प्रकाशित पुलिस रिपोर्टों से विवेकानंद के क्रांतिकारियों के साथ संबंधों के बारे में नए सबूत निम्नलिखित तरीके से सामने आते हैं।

1. रामकृष्ण मिशन के प्रतिष्ठान कभी–कभी भारत के विभिन्न हिस्सों में राष्ट्रवादियों द्वारा राजनीतिक अपराध करने वाले षड्यंत्रों के संगठन में नोडल बिंदु थे। जहां तक बड़े श्साजिश मामलों का संबंध है, हम लाहौर षडयंत्र मामले का उल्लेख कर सकते हैं। रासबिहारी बोस और साथ ही पांच आरोपी बंगाली युवक कथित तौर पर हरिद्वार में आरके मिशन शाखा के सदस्य थे। इसी तरह मानिकतटोला साजिश के मामले में, जिसमें अरबिंदो घोष को फंसाया गया था, कम से कम एक आरोपी, प्रज्ञानानंद (देवव्रत बसु) अल्मोड़ा में आरके मिशन के मायाबाती आश्रम से जुड़ा था।

2. कई आतंकवादी या तथाकथित आतंकवादी आरके मिशन आश्रम से जुड़े व्यक्ति थे। प्रसिद्ध बाघा जतिन (जतिनी मुखर्जी) कभी – कभी आश्रमों में जाते थे। जो लोग अधिक नियमित रूप से आश्रमों का दौरा करते थे, वे दो श्रेणियों से संबंधित थे– परिवीक्षाधीन जिन्होंने आश्रम छोड़ दिया था, जिन पर उग्रवादियों का कब्जा था, और पूर्व उग्रवादी जो जीवन में बाद में मिशन में शामिल हुए थे।

3. स्वामी विवेकानंद की प्रकाशित रचनाएँ और युवाओं को उनका संदेश उग्रवादियों के प्रशिक्षण के लिए उनके पाठ्यक्रम का हिस्सा बन गया। पुलिस रिपोर्ट आगे कहती है कि क्रांतिकारी दलों के सदस्यों ने विवेकानंद की शिक्षाओं पर कब्जा कर लिया और उन्हें अपने स्वयं के उद्देश्यों के अनुरूप अपनाया। दरअसल, श्चटगांव शस्त्रागार छापेश् के समय तक हो चुका था। पुलिस ने विवेकानंद द्वारा लिखी गई पुस्तकों के कब्जे को उन लोगों के बीच उग्रवादी प्रवृत्ति के पर्याप्त सबूत के रूप में माना जिन्हें उन्होंने गिरफ्तार किया था।

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के उदय में स्वामी विवेकानंद का योगदान

राष्ट्रवाद पर विवेकानंद के विचार भौगोलिक या राजनीतिक या भावनात्मक एकता पर आधारित नहीं थे, न ही इस भावना पर कि हम भारतीय हैं। राष्ट्रवाद पर उनके विचार गहन आध्यात्मिक थे। उनके अनुसार यह लोगों का आध्यात्मिक एकीकरण, आत्मा की आध्यात्मिक जागृति था। उन्होंने प्रचलित विविधता को विभिन्न आधारों पर पहचाना और सुझाव दिया कि भारतीय राष्ट्रवाद पश्चिम की तरह पृथकतावादी नहीं हो सकता है।

उनके अनुसार भारतीय लोग गहन धार्मिक प्रकृति के हैं और इससे एकजुट होने की शक्ति प्राप्त की जा सकती है। राष्ट्रीय आदर्शों के विकास से उद्देश्य और कार्यवाही में एकता प्राप्त की जा सकती है। उन्होंने करुणा, सेवा और त्याग को राष्ट्रीय आदर्शों के रूप में मान्यता दी। इसलिए विवेकानंद के लिए राष्ट्रवाद सार्वभौमिकता और मानवता पर आधारित था।

उनका मानना था कि प्रत्येक देश में एक ऐसा प्रभावी सिद्धांत होता जो उस देश के जीवन में समग्र रूप से परिलक्षित होता है और भारत के लिए यह धर्म था। धर्मनिरपेक्षता पर आधारित पश्चिमी राष्ट्रवाद के विपरीत स्वामी विवेकानंद के राष्ट्रवाद का आधार धर्म, भारतीय आध्यात्मिकता और नैतिकता थी। भारत में आध्यात्मिकता को सभी धार्मिक शक्तियों के संगम के रूप में देखा जाता है। यह माना जाता है कि यह इन सभी शक्तिओं को राष्ट्रीय प्रवाह में एकजुट करने में सक्षम है।

उन्होंने मानवतावाद और सार्वभौमिकता के आदर्शों को भी राष्ट्रवाद के आधार के रूप में स्वीकार किया। इन आदर्शों ने लोगों का स्व–प्रेरित बंधनों और उनके परिणामी दुखों से मुक्त होने हेतु पथप्रदर्शन किया है।

पिछली दो शताब्दियों के दौरान राष्ट्रवाद विभिन्न चरणों से गुज़रा है और सर्वाधिक आकर्षक शक्तियों में से एक के रूप में उभरा है। इसने लोगों को एकजुट करने के साथ–साथ विभाजित भी किया है। उन्नीसवीं शताब्दी में इसने यूरोप के एकीकरण तथा एशिया और अफ्रीका में उपनिवेशों की समाप्ति में प्रमुख भूमिका निभाई थी।

हालांकि, वर्तमान विश्व कट्टरपंथी राष्ट्रवाद का उदय हो रहा है। अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के स्थापित सम्मेलनों से संयुक्त राज्य अमेरिका का अलग होना, ब्रेक्ज़िट, स्कॉटलैंड की स्वतंत्रता के लिए दूसरे जनमत संग्रह की मांग इत्यादि इसके कुछ उदाहरण हैं। ऐसे में राष्ट्रवाद के एक संकीर्ण दृष्टिकोण अनेक समूहों में पैठ बना ली है। ये समूह दूसरों पर अपने अधिकार और अपने विशेषाधिकारों को सुनिश्चित करना चाहते हैं। ऐसा राष्ट्रवाद राष्ट्रों को विभाजित करता है, उन्हें अलग करता है। और असमानता बढ़ाने वाली अर्थव्यवस्थाओं को जन्म देता है। साथ ही यह अनेक ऐसे लोगों को देश से दूर कर देता है जो देश के लिए योगदान दे सकते हैं।

आधुनिक राष्ट्रवाद की विभाजनकारी शक्तियों के विपरीत स्वामी विवेकानंद का दृष्टिकोण सार्वभौमिक पहुँच और आध्यात्मिक पहचान की एकता पर केंद्रित था। यह समय उनकी ''प्रबुद्ध राष्ट्रवाद'' की धारणा को आत्मसात करने का है जो इस बात पर

बल देता है कि किसी एक देश का दूसरे देश पर अधिग्रहण करने का कोई आध्यात्मिक या नैतिक औचित्य नहीं हो सकता है।

राष्ट्रों और राष्ट्रवाद पर विवेकानंद के विचारों को इस प्रकार संक्षेप में प्रस्तुत किया जा सकता है–

- राष्ट्रों की शक्ति अध्यात्म में है ।
- प्रत्येक राष्ट्र जीवन में एक विषय का प्रतिनिधित्व करता है।
- आम नफरत या प्यार एक राष्ट्र को जोड़ता है।
- राष्ट्रों की क्षमता मनुष्य की अच्छाई पर निर्भर करती है और
- राष्ट्रों को अपने राष्ट्रीय संस्थानों को धारण करना चाहिए।

धर्म और तर्कसंगतता भारत के अतीत के संबंध में विवेकानंद की व्याख्या तार्किक थी और यही कारण रहा कि जब वे पश्चिम से वापस लौटे तो उनके साथ बड़ी संख्या में उनके अमेरिकी और यूरोपीय अनुयायी भी आए। वर्ष 1897 में रामकृष्ण मिशन की स्थापना की उनकी परियोजना में उन्हें इन अनुयायियों का सहयोग और समर्थन मिला। स्वामी विवेकानंद ने बल दिया कि पश्चिम की भौतिक और आधुनिक संस्कृति की ओर भारतीय आध्यात्मिकता का प्रसार करना चाहिये, जबकि वे भारत के वैज्ञानिक आधुनिकीकरण के पक्ष में भी मजबूती से खड़े हुए। उन्होंने जगदीश चंद्र बोस की वैज्ञानिक परियोजनाओं का भी समर्थन किया। स्वामी विवेकानंद ने आयरिश शिक्षिका मार्गरेट नोबल (जिन्हें उन्होंने श्सिस्टर निवेदिताश् का नाम दिया) को भारत आमंत्रित किया ताकि वे भारतीय महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने में सहयोग कर सकें। स्वामी विवेकानंद ने ही जमशेदजी टाटा को भारतीय विज्ञान संस्थान और टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी की स्थापना के लिये प्रेरित किया था। भारत को एक धर्मनिरपेक्ष ढाँचे की आवश्यकता थी जिसके चलते वैज्ञानिक और तकनीकी विकास भारत की भौतिक समृद्धि को बढ़ा सकते थे और विवेकानंद के विचार इसके प्रेरणा स्रोत बने ।

राष्ट्रवाद आधुनिक काल में पश्चिमी विश्व में राष्ट्रवाद की अवधारणा का विकास हुआ लेकिन स्वामी विवेकानंद का राष्ट्रवाद प्रमुख रूप से भारतीय अध्यात्म एवं नैतिकता से संबद्ध है। भारतीय संस्कृति के प्रमुख घटक मानववाद एवं सार्वभौमिकतावाद विवेकानंद के राष्ट्रवाद की आधारशिला माने जा सकते हैं। पश्चिमी राष्ट्रवाद के विपरीत विवेकानंद का राष्ट्रवाद भारतीय धर्म पर आधारित है जो भारतीय लोगों का जीवन रस है। उनके लेखों और उद्धरणों से यह इंगित होता है कि भारत माता एकमात्र देवी हैं जिनकी प्रार्थना देश के सभी लोगों को सहृदय से करनी चाहिये।

वेदांत दर्शन वेदांत दर्शन उपनिषद् पर आधारित है तथा इसमें उपनिषद् की व्याख्या की गई है। वेदांत दर्शन में ब्रह्म की अवधारणा पर बल दिया गया है, जो उपनिषद् का केंद्रीय तत्त्व है। इसमें वेद को ज्ञान का परम स्रोत माना गया है, जिस पर प्रश्न खड़ा नहीं किया जा सकता। वेदांत में संसार से मुक्ति के लिये त्याग के स्थान पर ज्ञान के पथ को आवश्यक माना गया है और ज्ञान का अंतिम उद्देश्य संसार से मुक्ति के माध्यम से मोक्ष की प्राप्ति है। वर्ष 1897 में विवेकानंद ने अपने गुरु रामकृष्ण परमहंस की मृत्यु के पश्चात् रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। इस मिशन ने भारत में शिक्षा और लोकोपकारी कार्यों जैसे– आपदाओं में सहायता, चिकित्सा सुविधा, प्राथमिक और उच्च शिक्षा तथा जनजातियों के कल्याण पर बल दिया।

नैतिकता अतीत में आधुनिक मूल्यों का विकास न होने के कारण व्यैक्तिक एवं सामाजिक जीवन में नैतिकता प्रमुख रूप से धर्म एवं सामाजिक बंधनों पर आधारित होती थी, हालाँकि ऐसी स्थिति वर्तमान में भी मौजूद है लेकिन इसके साथ अन्य कारक भी नैतिकता के लिये प्रेरक का कार्य करते हैं। विवेकानंद ने आंतरिक शुद्धता एवं आत्मा की एकता के सिद्धांत पर आधारित नैतिकता की नवीन अवधारणा प्रस्तुत की। विवेकानंद के अनुसार, नैतिकता और कुछ नहीं बल्कि व्यक्ति को एक अच्छा नागरिक बनाने में सहायता करने वाली नियम संहिता है। मानव नैसर्गिक रूप से ही नैतिक होता है, अतः व्यक्ति को नैतिकता

के मूल्यों अवश्य अपनाना चाहिये। आत्मा की एकता पर बल देकर विवेकानंद ने सभी मनुष्यों के मध्य सहृदयता एवं करुणा की भावना के प्रसार का प्रयास किया है।

युवाओं के लिये प्रेरणा स्वामी विवेकानंद का मानना है कि किसी भी राष्ट्र का युवा जागरूक और अपने उद्देश्य के प्रति समर्पित हो, तो वह देश किसी भी लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। युवाओं को सफलता के लिये समर्पण भाव को बढ़ाना होगा तथा भविष्य की चुनौतियों से निपटने के लिये तैयार रहना होगा, विवेकानंद युवाओं को आध्यात्मिक बल के साथ–साथ शारीरिक बल में वृद्धि करने के लिये भी प्रेरित करते हैं।

शिक्षा पर बल स्वामी विवेकानंद का मानना है कि भारत की खोई हुई प्रतिष्ठा तथा सम्मान को शिक्षा द्वारा ही वापस लाया जा सकता है। किसी देश की योग्यता तथा क्षमता में वृद्धि उस देश के नागरिकों के मध्य व्याप्त शिक्षा के स्तर से ही हो सकती है। स्वामी विवेकानंद ने ऐसी शिक्षा पर बल दिया जिसके माध्यम से विद्यार्थी की आत्मोन्नति हो और जो उसके चरित्र निर्माण में सहायक हो सके। साथ ही शिक्षा ऐसी होनी चाहिये जिसमें विद्यार्थी ज्ञान प्राप्ति में आत्मनिर्भर तथा चुनौतियों से निपटने में स्वयं सक्षम हों। विवेकानंद ऐसी शिक्षा पद्धति के घोर विरोधी थे जिसमें गरीबों एवं वंचित वर्गों के लिये स्थान नहीं था।

मानवतावाद एवं दरिद्रनारायण की अवधारणा विवेकानंद एक मानवतावादी चिंतक थे, उनके अनुसार मनुष्य का जीवन ही एक धर्म है। धर्म न तो पुस्तकों में है, न ही धार्मिक सिद्धांतों में प्रत्येक व्यक्ति अपने ईश्वर का अनुभव स्वयं कर सकता है। विवेकानंद ने धार्मिक आडंबर पर चोट की तथा ईश्वर की एकता पर बल दिया। विवेकानंद के शब्दों में ''मेरा ईश्वर दुखी, पीड़ित हर जाति का निर्धन मनुष्य है।'' इस प्रकार विवेकानंद ने गरीबी को ईश्वर से जोडकर दरिद्रनारायण की अवधारणा दी ताकि इससे लोगों को वंचित वर्गों की सेवा के प्रति जागरूक किया जा सके और उनकी स्थिति में सुधार करने हेतु प्रेरित किया जा सके। इसी प्रकार उन्होंने गरीबी और अज्ञान की समाप्ति पर बल दिया तथा गरीबों के कल्याण हेतु कार्य करना राष्ट्र सेवा बताया। किंतु विवेकानंद ने वेद की प्रमाणिकता को स्वीकार करने के लिये वर्ण व्यवस्था को भी स्वीकृति दी। हालाँकि वे अस्पृश्यता के घोर विरोधी थे।

निष्कर्ष

विवेकानन्द की प्रबल इच्छा थी कि राष्ट्र एवं मानव सेवा का यह कार्य सुनियोजित और व्यवस्थित तरीके से हो। इसलिए उन्होंने जन सेवा कार्य का विस्तार करने के लिए अपने सभी संन्यासी और गृहस्थ साथियों व भक्तों को साथ लेकर 1897 में 'रामकृष्ण मिशन' नाम से एक संघ का गठन किया। उनका यह संगठन सामाजिक, मानवीय और सर्वभौम कल्याण के उद्देश्यों को समर्पित था। अधिकांश धार्मिक संगठनों के विपरीत यह आधुनिक जीवन में विज्ञान व तर्क की महत्ता के विरुद्ध नहीं था, अपितु विज्ञान के साथ चलना चाहता था। विवेकानन्द ने राष्ट्र– निर्माण हेतु ज्ञानयोग, कर्मयोग, भक्तियोग का आदर्श प्रतिपादित किया और हिन्दू धर्म के मानवतावादी एवं सार्वभौमिक मूल्यों को रेखांकित किया। उन्होंने बताया कि धर्माचरण दरिद्रता में संभव नहीं है। वस्तुतः दरिद्रता निवारण ही सच्चा मानव धर्म है। वस्तुतः विवेकानन्द एक समन्वयवादी सुधारक थें। भारतीय अध्यात्म का पाश्चात्य भौतिकवाद के साथ तथा भारतीय वेदान्त का पाश्चात्य विज्ञान के साथ समन्वय करके वे एक ऐसे आदर्श मानव समाज की स्थापना पर जोर देते थें जिसमें असमानता, अन्याय, शोषण, निरंकुशता, गुलामी आदि का कोई स्थान न हो। कुल मिलाकर विवेकानन्द की शिक्षाओं ने भारतवासियों में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की चेतना को सींचा जिसके चलते वे राष्ट्रीय स्वतंत्रता के महत्त्व को समझने लगे।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अल्तेकर, ए. एस., द पोजिशन ऑफ वीमेन इन हिन्दू सिविलाईजेशन, मोतीलाल बनारसी दास पब्लिशर, बनारस, 1951.
2. अशरफ, के. एम., लाइफ एण्ड कन्डीशन्स ऑफ दी पीपुल ऑफ हिन्दुस्तान, गयान पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, 2001.
3. अरोड़ा वी. के., सोशल एण्ड पॉलिटिक्ल फिलॉसफी ऑफ स्वामी विवेकानन्दा, पुन्थी पुस्तक पब्लिकेशन्स, 1968.
4. आदिश्वरनन्द, स्वामी विवेकानन्दः ए वल्ड टीचर, वरमेन्ट प्रकाशन दिल्ली, 2006.
5. उपाध्याय पूनम, सोशल पॉलिटिक्ल, इकॉनामिक एण्ड एजुकेशनल आईडियाज ऑफ राजाराम मोहन राय, दिल्ली कॉलेट,
6. एस. डी., द लाइफ एण्ड लैटर्स ऑफ राजा राममोहन राय, कलकत्ता, 1900.
7. कश्यप, शैलेन्द्र से विंग हयुमेनटीः स्वामी विवेकानन्द प्रोस्पेक्टिव, विवेकानन्द स्वाध्याय मण्डल, दिल्ली, 2012.
8. क्रिश्चियन, वी. डी., फिलोसफी ऑफ ए रिलिजियस लीडर, ग्रीनबुड पब्लिकेशन, लन्दन, 1999.
9. किशोर, बी. आर., स्वामी विवेकानन्दा, रामकृष्ण मिशन, कलकत्ता, 1997.
10. गोखले, बी. जी., स्वामी विवेकानन्द एण्ड इण्डिया, ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटी, 1964.
11. गुप्त, कांति प्रसन्न सेन, दि क्रिश्चियन मिशनरीज इन बंगाल, कलकता, 1971.
12. गुप्ता, एन. एल., स्वामी विवेकानन्द अनमोल पब्लिकेशन, दिल्ली, 2003.
13. घोष, गौतम, ए बायोग्राफी आफ स्वामी विवेकानन्दा, मेहता पब्लिक हाऊस, कलकत्ता, 2004.
14. चन्द, पदमाराम, एनसाइक्लोपिडिया ऑफ इण्डियन ऐजुकेशन, खण्ड–प्प्, पृ. 1843.
15. चौधरी, एस. के., द ग्रेट थिंकरः स्वामी विवेकानन्दा, सोनाली पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2008.
16. चक्रवर्ती, मोहित, स्वामी विवेकानन्दः ए स्टडी ऑफ एन ऐसथेटिक, अटलान्टिक पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 1993.